RNI. MAHMUL02805/2010/33461

IMPACT FACTOR 6.20

ISSN 0976-0377

International Registered & Recognized

Research Journal Related to Higher Education for all Subjects

INTERLINK RESEARCH ANALYSIS

REFEREED & PEER REVIEWED RESEARCH JOURNAL

Issue : XXI, Vol. I
Year - 11 (Half Yearly)
(Jan. 2020 To June 2020)

Editorial Office :
'Gyandeep',
R-9/139/6-A-1,
Near Vishal School,
LIC Colony,
Pragati Nagar, Latur
Dist. Latur - 413531.
(Maharashtra), India.

Contact : 02382 - 241913
09423346913,09637935252,
09503814000,07276301000

Website
www.irasg.com

E-mail :
interlinkresearch@rediffmail.com
visiongroup1994@gmail.com
mbkamble2010@gmail.com
drkamblebg@rediffmail.com

Publisher :
Jyotichandra Publication,
Latur, Dist. Latur.-415331
(M.S.) India

Price: ₹ 200/-

CHIEF EDITOR

Dr. Balaji G. Kamble
Research Guide & Head, Dept. of Economics,
Dr. Babasaheb Ambedkar Mahavidyalaya, Latur, Dist. Latur (M.S.)
Mob. 09423346913, 9503814000

EXECUTIVE EDITORS

Dr. Aloka Parasher Sen
Professor, Dept. of History & Classics,
University of Alberta, Edmonton,
(CANADA).

Dr. Laxman Satya
Professor, Dept. of History,
Lokhevan University, Loheavan,
PENSULVIYA (USA)

Dr. Huen Yen
Dept. of Inter Cultural
International Relation
Central South University,
Changsha City, (CHAINA)

Bhujang R. Bobade
Director, Manuscript Dept.,
Deccan Archaeological and Cultural
Research Insititute,
Malakpet, Hyderabad. (A.P.)

Dr. Sachin Napate
Dept. of Business,
Indira Business School,
Pune, Dist. Pune (M.S.)

Dr. Sadanand H. Gone
Principal,
Ujwal Gramin Mahavidyalaya,
Ghonsi , Dist. Latur. (M.S.)

Dr. G.V. Menkudale
Dept. of Dairy Science,
Mahatma Basweshwar College,
Latur, Dist. Latur.(M.S.)

Dr. Balaji S. Bhure
Dept. of Hindi,
Shivjagruti College,
Nalegaon, Dist. Latur.(M.S.)

DEPUTY-EDITORS

Dr. S.D. Sindkhedkar
Vice Principal
PSGVP's Mandals College,
Shahada, Dist. Nandurbar (M.S.)

Veera Prasad
Dept. of Political Science,
S.K. University,
Anantpur, (A.P.)

Dr. C.J. Kadam
Head, Dept. of Physics
Maharashtra Mahavidhyalaya,
Nilanga, Dist. Latur.(M.S.)

Johrabhai B. Patel,
Dept. of Hindi,
S.P. Patel College,
Simaliya (Gujrat)

CO-EDITORS

Sandipan K. Gaike
Dept. of Sociology,
Vasant College,
Kej, Dist. Beed (M.S.)

Dr. Shivaji Vaidya
Dept. of Hindi,
B. Raghunath College,
Parbhani,Dist. Parbhani.(M.S.)

Ambuja N. Malkhedkar
Dept. of Hindi
Gulbarga, Dist. Gulbarga,
(Karnataka State)

Dr. Shivanand M. Giri
Dept. of Marathi,
B.K. Deshmukh College,
Chakur Dist. Latur.(M.S.)

RNI. MAHMUL02805/2010/33461
Interlink Research Analysis
IMPACT FACTOR 6.20
ISSN 0976-0377
Issue : XXI, Vol. I, Jan. 2020 To June 2020

INDEX

Sr. No	Title for Research Paper	Page No
1	Global life Insurance Industry: Concerns and Promises **Dr. P. T. Pawar**	1
2	Dielectric Study of Acetonitrile-Dichloromethane Mixture at Microwave Frequency **I. G. Shere**	11
3	Nutritional problems in Rural Community of Latur Districts children **Dr. J. K. Waghmare**	15
4	Preparation of Norms for the School going boys between 11 To 14 Years of age in different body Composition and Motor Qualities of Solapur District **Dr. Suresh Bhosale**	23
5	भूमण्डलीकरण के संदर्भ में हिंदी **डॉ. कांचनमाला बाहेती**	31
6	दलित - जीवन की समस्याएँ **डॉ. महावीर रामजी हाके**	35
7	अब्दुल्ला दीवाना नाटक में नैतिक मूल्य **डॉ. राजू शेख**	40
8	म्हणीतून घडणारे सांस्कृतिक जीवनदर्शन **सुधीर एल. गरड**	43
9	धर्म आणि धर्माची कार्य याचा समाजशास्त्रीय अभ्यास **डॉ. जितेंद्र कोकणे**	47

RNI. MAHMUL02805/2010/33461
Interlink Research Analysis
IMPACT FACTOR 6.20
ISSN 0976-0377
Issue : XXI, Vol. I, Jan. 2020 To June 2020

दलित - जीवन की समस्याएँ

डॉ. महावीर रामजी हाके
हिन्दी विभाग,
कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय,
गंगाखेड, जि. परभणी

6 Research Paper - Hindi

उपन्यास यथार्थ की विधा है। यथार्थ धर्मिता ही उसका प्राणतत्व है। जिस विधा में यथार्थ का इतना आग्रह हो वहाँ बहुत स्वाभाविक है कि उसमें मानव - जीवन तथा मानव समाज की समस्याएँ अन्तर्निहित हों। जीवन एक संघर्ष हैं। उसमें कदम पर मनुष्य को अपने अस्तित्व के लिए जुझना पडता है। इस संघर्ष की स्थिती में कारण ही नाना प्रकार की समस्याएँ मनुष्य के सम्मुख उपस्थित होती है। ये समस्याएँ, धार्मिक समस्याएँ, नैतिक समस्याएँ, मनोवैज्ञानिक समस्याएँ आदि। परंतु यहाँ एक बात ध्यान में रहे कि ये समस्याएँ एक दुसरे में गुंथी हुई और एक दुसरे में उलझी हुई होती है। इनको अलग अलग करके देखना आसान या सहज नहीं हैं।

इस संदर्भ में डॉ. के.एम. पणिक्कर ने कहा है, "विचित्र बात यह है कि स्वयं अछुतों के भीतर एक पृथक जाति के समान संगठन था। सवर्ण हिंदुओं के समान उनमें भी बहुत उच्च और निम्न स्थिती वाली उप जातियों का संस्तरण था, जो एक दुसरे से श्रेष्ठ होने का दावा करती थी।"[१]

वस्तुत: अपनी जातिगत उँच नीच की भावना को उचित तथा न्याय संगत ठहराने के लिए समाज के ठेकेदारों ने निम्न वर्ग के लोगों में भी उँच - नीच की यह दरार डाल दी थी, ताकि ये लोग कभी संगठित होकर अन्याय और अत्याचार का सामना न कर सकें। उँच नीच के ख्यालों के साथ वे भी परस्पर एक दुसरे से लड़ने झगडते रहे।

इस प्रकार हम निम्निलिखित समस्याओं के बारे में विस्तार से जानकारी प्राप्त करेंगे।

१. सामाजिक समस्या :

पहले ही निर्दिष्ट किया जा चुका है कि दलित जातियों पर कई प्रकार की सामाजिक निर्योग्याताएँ (Social Disabilities) थोपी गयी है। अस्पृश्य जातियों के सामाजिक सम्पर्क पर एक प्रकार की रोक लगा दी गई थी। वे सभा - सम्मेलनों, गोष्ठियों, पंचायतो, उत्सवों एवं सामाजिक समारोहों मे भाग नही ले सकते थे कई स्थानों पर तो उनकी छाया तक को अस्पृश्य माना जाता था। उनको सार्वजनिक स्थानों के उपयोग की आज्ञा नहीं थी क्योंकि बहुत से सवर्ण हिंदुओ को

उनके दर्शन मात्र से अपवित्र होने की आशंका रहती थी। दक्षिण भारत में कई स्थानों पर तो उनको सडकों पर चलने का अधिकार भी नही था। अच्छे वस्त्र एवं साने के आभूषण नहीं पहन सकते थे, नाई उनके बाल नहीं बनाते थे और कहार उनका पानी नहीं भरते थे एक पृथक समाज के रुप में उनको रहना पडता था। इन निर्योग्यताओं के कारण दलित जातियों में हमे कई प्रकार की सामाजिक समस्याएँ मिलती हैं।

२. अस्पृश्यता की समस्या :

अस्पृश्यता की समस्या कें कारण एक पृथक समाज के रुप में उनको रहना पडता था। प्राय: उनके मुहल्ले या गाँव नगर के बाहर होते थे। उनके मुहल्लों को चमादडी, चमरौटी, चमरवास, डुम्पोल जैसे नाम दिये गये है। अस्पृश्यता के कारण उनका मंदिर प्रवेश निषिध्द माना गया है। प्रेमचन्द के उपन्यास 'कर्मभुमि' में अछुतों की समस्या को लिया गया है। यह उपन्यास अनेक दृष्टियों से एक निराला उपन्यास हैं। इसे उन्होंने पाँच भागो में विभक्त किया है। प्रथम भाग में न तो काई अछुत पात्र है और है और न अछुतों की किसी समस्या को लिया गया है। इसमें उपन्यास के नायक अमरकांत के निजी पारिवारिक जीवन की कथा है। परंतु यहाँ लेखक ने बडी ही कुशलता से धर्म तथा अछुत संबंधी अमर के दृष्टिकोण को स्पष्ट किया है, "वह धर्म के पीछे लाठी लेकर दौडने लगा। धन के संबंध का उसे बचपन से ही अनुभव होता आया था। धर्म बंधन उससे कही कठोर, कही असह्य, कही निरर्थक था। धर्म का काम संसार में मेल और को बढाना है। यहाँ धर्म ने विभिन्नता और द्वेष पैदा कर दिया है। क्यों खान पान में, रस्म - रिवाज में धर्म अपनी टाँगे अडाता है मैं चोरी करुँ, खुन करुँ, धोखा दुँ धर्म मुझे अलग नही कर सकता। अछुत के हाथ से पानी भी लुँ, धर्म छु-मंतर हो गया। अच्छा धर्म है। हम धर्म से बाहर किसी से आत्मा का संबंध भी नहीं कर सकते। आत्मा को भी धर्म ने बाँध रखा है यह धर्म नहीं, धर्म का कलंक है।"[२]

अत: इस उपन्यास में अमरकांत, डॉ. शांतिकुमार, सुखदा आदि पात्र अछुतों की समस्या को लेकर जुझते हैं। 'कर्मभुमि' में इस समस्याको उन्होंने व्यापक रुप से उठाया है।

'गोदान' उपन्यास में प्रेमचन्द जी अछुतों की सामाजिक धार्मिक समस्याओं का विशद चित्रण करते हैं। पंडित दानादीन के पुत्र मातादीन सिलिया चमारिन की जवानी का सुख भोगते है। सिलिया उसकी रखैल जरुर है, लेकिन उसकी गति केवल शारीरिक सहवास तक ही सीमित है। वह सहभोज की अधिकारिनी नहीं है। मातादिन और उनके पिता पं. मातादीन अपने भोजन की पवित्रता बनाए हुए हैं, मातादीन के शब्दों में "सिलिया" हमारी चौखट नहीं लॉघ पाती, बरतन - भाँडे, छुना तो दुर त्की बात हैं।[३] इस संदर्भ में व्यंग्य करते हुए प्रेमचन्द जी स्वयं मातादिन का परिचय देते है।

२. दलितों के अपमान की समस्या: समाज में दलित वर्ग के लोगों की जो स्थिती है, उसे देखते हुए कोई भी व्यक्ति बहुत आसानी से मन में किसी भी प्रकार का अपराध बोध या पछतावे का भाव लाये बिना दलित वर्ग के लोगों का अपमान कर जाता है। उनके साथ गाली गलौज का व्यवहार करते है। उनको मारते - पीटते है। जगदीश चंद्रकृत 'धरती धन न अपना' उपन्यास में एकसे कई प्रसंग आए है, जहाँ बात-बेबात चमार जाति के लोगों का अपमान किया गया है। बात-बात में उनकों "साला, कुत्ता, चमार" जैसे शब्दों से नवाजा जाता है।

प्रेमचंद के उपन्यास 'गबन' में रमानाथ के छोटे भाई गोपी और जालपा की बातों में छोटी जाति के प्रति अपमान का भाव दिखाई पडता है। यथा "दोनों नीचे चले गये तो गोपी ने आकर कहा" भैय्या इसी खटिक के यहाँ रहते थे क्या ? खटिक ही तो मालुम होते है। जालपा ने फटकारकर कहा खटिक हो या चमार हो, लेकिन हमसे और तुमसे सौ गुने अच्छे है। एक परदेशी आदमी को छह महिने तक अपने घर में ठहराया, खिलाया पिलाया। हम में है इतनी हिम्मत ? यहाँ तो कोई मेहमान आ जाता है तो वह भारी हो जाता है। अगर यह नीच है तो इम इनसे कहीं नीच है। गोपी मुँह हाथ धो चुका था। मिठाई खाता हुआ बोला-किसी को ठहरा लेने से कोई उँचा नही हो जाता। चमार कितना ही दान पुण्य करे, पर रहेगा तो चमार ही। जालपा मैं उस चमार को उस पंडित से अच्छा समझूँगा जो हमेशा दुसरों का धन खाया करता हैं।[४] उपर्युक्त संवाद में गोपी की बातों से चमार जाति के प्रति सामान्य तौर पर लोगों में जो अपमान का भाव पाया जाता हैं, उसे हम लक्षित कर सकते हैं।

३. दलितों पर होने वाले अत्याचार और अन्याय की समस्या :

समाज में दलितों की स्थिती हमेशा निम्न कोटी की ही रही हैं, अत: उन पर सब प्रकार के अत्याचार होते रहें है। गाँवो मे जाति प्रथा (Caste System) इतनी मजबुत हे कि उँची जाति के लोग नीची जाति के लोगों पर चाहे जितने अत्याचार करें, कोई उनको पुछने वाला नही हैं। बचपन की एक स्मृति मेरे मस्तिष्क में कौंध रही है एक बार हमारें गाँव के मेवशियों में कोई बीमारी फैली, जिसके कारण ढोर फटाफट मरने लगे। गाँव के भुआ ने घुडक कर कहा, "कि हमारे गाँव के चमार ने कुछ तंत्र - मंत्र किया है, जिसके कारण गाँव के ढोर मर रहे है। तब गाँव के सभी लोगों ने मिलकर उसर चमार की खुब जमकर पिटाई की थी। वह मरणासन हो गया था।"[५] अर्थात कुछ भी हो उसका दोष दलितों पर ही थोपा जाता था।

जगदीश चंद्रकृत 'धरती धन न अपना' उपन्यास में चमारों पर होने वाले अत्याचार और अन्याय के अनेक प्रसंग उपलब्ध होते है। उपन्यास का प्रारंभ ही एके ऐसी घटना से होता है। चौधरी हरनाम सिंह चमारों के मुहल्ले में जाकर जितु नामक एक चमार को बुरी तरह सो पीटते है। लेखक ने यहाँ जो टिप्पणी दी है, वह विचारणीय है। यथा "चमादडी में ऐसी घटना कोई नई बात नहीं थी

। ऐसा अक्सर होता रहता था। जब किसी चौधरी की फसल चोरी से कट जाती या बरबाद हो जाती या चमार चौधरी के काम पर न जाता था या फिर किसी चौधरी के अन्दर जमीन की मल्कियत का अहसास जोर पकड लेता है वह अपनी साख बनाने और अपना चौधरापन मनवाने के लिए इस मुहल्ले में चला जाता।"[६] इसी उपन्यास मे गाँव के चमारों से बेगार कारवाई की जाती है, उसका भी जिक्र आया है।

४. दलित - स्त्रियों के यौन शोषण की समस्या :

लगभग सभी उपन्यायों में दलित जाती की स्त्रियों के यौन शोषण की समस्या को लिया गया है, क्योंकि यह हमारे समाज की एक घिनौनी वास्तविकता है। दलित जातियों के लोगों के गाँव के सत्ताधीश संपन्न वर्ग के जमींदार लोगों पर आजीविका के लिए निर्भर रहना पडता हैं। पुरुष वर्ग हल चलाता है या खेतिहर मजदुरी करता है और उनकी स्त्रियाँ भी इन लोगों के यहाँ मेहनत - मजदुरी का काम करती है। अत: उनकी विवशता का लाभ उठाकर ये लोग उनका यौन शोषण भी करते है, इतना ही नही वे इसे अपना जन्मीसध्द अधिकार समझते है।

डॉ. रांगेय राघव के उपन्यास 'कब तक पुकारुँ', में करनट जाति के शोषण की बात आती है। इस जाती के लोग जरायमपेशा अपराध जीवी माने जाते है। सभ्य और सवर्ण समाज में इन जातियों के नाम गालियों सम्मिलित होते है। इस उपन्यास में लेखक ने यह चित्रित किया है कि इस जाती लोगोंकी स्त्रियो का खुब यौन शोषण होता है। बडे लोग तथा पुलिस के दरोगा तथा दुसरे अधिकारी भी उनका यौन - शोषण करते है। सुखराम की पत्नी प्यारी बहत सुंदर है। एक बार करतब दिखाते हुए दरोगा की नजरों में वह आ ती है। प्यारी के लिए थाने से बुलावा आ जाता है। जब प्यारी मना करती है तब उसकी माँ सोना उससे कहती है, "औरत का काम औरत का काम है। इसमें भला बुरा क्या ? कौन नही करती। नहीं तो मार - मार करत खाल उधेड देगा दरोगा। और तेरे बाप और खसम दोनों को जेल भेज देगा, फिर न रहेगा तो क्या करेंगी? फिर भी तो पेट भरने के लिए यही करना होगा ?"[७]

सवर्ण - दलित मानसिकता की समस्या :

सवर्ण - दलित मानसिकता यह शीर्षक विरोधाभाषी लग सकता है। दलित - दलित होता है। कोई दलित सवर्ण कैसे हो सकता है ?

शैलेश मटियानी कृत नागवल्लरी में ललितराम् तिलकराम आदि पात्र दलित वर्ग के है, परंतु सरकार की आरक्षण की नीतियों का लाभ लेते हुए वे कमिश्नर तथा डी.एम. हो गये है। डॉ. आरिग पुडि के उपन्यास 'अभिशाप' के कथानायक पदमनाभन भी अछुत वर्ग से है। पदमनाभन एक प्रखर बुध्दिवादी और बुध्दिशाली व्यक्तित्व के धनी है। परिश्रम तथा मेधावी प्रतिभा के कारण वे आई. ए. एस. ऑफिसर के रुप में चुन लिये गये है और निरंतर प्रगती करते हुए भारत सरकार में उच्चाती

उच्च स्थानों तक पहुँचते है । परंतु इस उपलब्धि के बाद वे अपनी जाती और वर्ग से कट जाते है । वे अपने परिवार से कट जाते है । अपनी इस प्रवृत्ती को न्यायी-प्रमाणित करने के लिए वे कहते है कि, "किसी ने कभी मेरी मदद नहीं की तो मैं उनकी मदत क्यों करु और उनको मुझसे किसी मदद की उम्मीद भी नही करनी चाहिए ।"[८]

यहाँ पदमनाभन का रवैया नितांत स्वार्थी और सवर्णवादी हे ।

इस प्रकार स्थिती का पहूल यह भी है कि दलित जातियों में से उभर कर जो लोग आ रहे है, वे अपना एक अलग वर्ग बना रहे है । उनमें भी क्रमश: सवर्ण मानसिकता हा रही है, इतना ही नही, वे सवर्ण के रीति, रिवाजों को भी अपना है और ऐसा करने में गर्व का अनुभव कर रहे है ।

संदर्भ संकेत :-

१) हिन्दु समाज निर्णय के द्वार पर डॉ. के एम.पणिक्कर पृ. २३९
२. कर्मभूमि प्रेमचन्द पृ. ९०-९१
३. वही पृ. २०७
४. गबन प्रेमचन्द पृ. ३०२
५. मानपुरा तहसील डमोई - जिला बडौदा गुजरात पृ. १९१
६. धरती धन न अपना जगदीश चन्द्र पृ.३५
७. कब तक पुकारुँ - रांगेय राघव पृ. ४५
८. अभिशाप - डॉ. आरिग पुडि पृ. ०५